

अर्जिवार्ष श्री जयेश मोरे यांची दि. १९०/०८ चे अजनिवये भगव मुमापन चेंडूर योथिल न. मु. कृ. १४५८, १४५८/७ ते८ ची टुनविलोकन आलेख कृ. ६० वर्कनतशार केलेली कारणापुढती नकाशा नववाढत.



	੯੪੫	ਗੁ	ਜ ਕੁ	੯੪੪	
੮੩			੭੪੫		੮੩
ਜ					ਜ
ਸ੍ਰ					ਸ੍ਰ
ਖ					ਖ
੬੪੫					੬੪੫
ਗੁ	੮੩	੬੬	ਵਾ	੮੩	ਗੁ

प्रिय- संदर नकाशामध्ये लग्न शाळेचे रुक्कटी बोधवगम नसून काळया क्षाईचे तीन वांदा वगम आहेत.

- १) सदरची चालक आवश्यक आलेख  
वह देखते हैं कि किसी  
२) सदरची चालक आवश्यक आवश्यक होने के जारीवार  
आढ़द्वारा आवश्यक होने के बाहर होता है। (जैसे  
शक्ति अद्वैत इति एवं शुद्ध गणय  
भूमाप्तिके की आवश्यकताविलोकन  
क्षीणत्वा चालकादीत करता आले  
काव्यावत (प्राचीन ग्रन्थों का अनुवाद)  
३) सदरची चालक आवश्यक आवश्यक  
स्थिती दर्शिता एवं उनकी आवश्यकत  
स्थिती दर्शविभावना एवं सामाजिकी भोजणी  
क्षम्य येंगे आवश्यक आवश्यक

१०८ इत्याची तारीख २५/१०/१०. एकांग शुल्क.....  
इकल नयां तारीख २५/१०/१० नवकेवे शुल्क.....  
प्रिया की तारीख २५/१०/१० लिपांग शुल्क.....  
इचार इकलार ..... प्रिया की शुल्क.....  
इसाईकी इकलार ..... ३ ..... लिपांग शुल्क.....  
परोद्युक्तम् ..... एकांग शुल्क.....